Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh

Date- Class - VI
Subject - Hindi Literature Page - 1
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

पुस्तक - नवतरंग भाग-6
पाठ - 8 'सुभाषचंद्र बोस का पत्र'
लेखक - सुभाषचंद्र बोस

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

यह पाठ-8 'सुभाषचंद्र बोस का पत्र' कक्षा छठी की पृष्ठ संख्या - 61 में दिया गया है। यह पाठ आपको 8 अगस्त, 2022 को भेजा जाएगा।

प्यारे बच्चो ! आज हम पाठ-8 'सुभाष चंद्र बोस का पत्र' पढ़ेंगे। इस लिए सभी बच्चे अपनी हिन्दी की पुस्तक नवतरंग भाग-6 का पृष्ठ - 61 निकाल लें और अपने पास हिन्दी की एक अभ्यास पुस्तिका भी रख लें क्योंकि मैं आपको पाठ के बीच में कुछ कार्य लिखने के लिए भी दूँगी। यदि आप तैयार हैं तो मैं आपको पाठ 'सुभाषचंद्र बोस का पत्र' समझाने जा रही हूँ। सभी बच्चे इसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे एवं समझेंगे।

बच्चो ! यह पाठ 'सुभाषचंद्र बोस का पत्र' स्वयं 'सुभाषचंद्र बोस' जी द्वारा लिखा गया है। यह पत्र उन्होंने अपनी माता जी को मात्र 16 वर्ष की आयु में लिखा था। इस पत्र में उन्होंने घरेलू बातों के साथ कुछ ऐसी बातें भी लिखी हैं जिनसे पता चलता है कि वे बचपन से ही कितने उच्च विचारों और आदर्शों की धनी थे।

Scanned with CamScanner

__/__/____

Date- Class- VI
Subject- Hindi Literature Page-2
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

बच्चो ! आज हम इस पाठ में सुभाषचंद्र बोस जी द्वारा लिखा पत्र पढ़ेंगे। यह पत्र उन्होंने सन् 1913 में रांची से अपनी माँ के लिए लिखा था। उन्होंने इस पत्र के माध्यम से अपनी मामी की तबीयत के बारे में अपनी माँ को बताया है कि मामी जी की तबीयत खराब होने के कारण हमें रांची में रुकना पड़ा परन्तु अब वह पहले से अच्छी हैं। अब हम कल यहाँ से चलेंगे और परसों सुबह जल्दी कलकत्ता पहुँच जाएँगे।

आगे अपने पत्र में लिखते हुए वह बता रहे हैं कि मुझे 20 रुपए का वज़ीफ़ा मिला है और इसके बारे में मैंने परीक्षा से पहले ही आशा लगा ली थी। इसका कारण यह था कि मैं इस पैसे से ज़रूरतमंदों की सहायता करना चाहता हूँ। मुझे पैसे की कोई चाह नहीं है। मैं यह पैसा अपने लिए नहीं चाहता हूँ। मुझे ज्ञात है कि पैसा ही सभी बुराइयों की जड़ है। इसलिए मैं अपने ऊपर इस पैसे की एक पाई भी खर्च नहीं करूँगा। वह आगे लिखते हैं कि मुझे नहीं पता कि कक्षा में मेरा इतना ऊँचा स्थान कैसे आ गया। मैंने परीक्षा से पहले बहुत कम पढ़ाई की थी और काफ़ी समय से तो मैं पढ़ाई की ओर ज्यादा ध्यान ही नहीं दे पाया था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं इस स्थान के योग्य नहीं था, मुझे तो ऐसा लगता था कि मुझे सातवाँ स्थान मिलेगा। माता ! यदि मुझे कम पढ़ाई करके ऐसा अच्छा स्थान मिल सकता है तो उनके लिए क्या कह सकता हूँ, जो अपना सारा समय पढ़ाई को ही देते हैं।

Scanned with CamScanner

Date- Class- VI
Subject- Hindi Literature Page- 3
Subject Teacher- Ms Roma Rani

बच्चो! मैंने आपको यहाँ तक पाठ समझा दिया है। अब मैं आपसे इसके आधार पर कुछ प्रश्न पूछूँगी। अब आप यहाँ तीन मिनट का अंतराल लेंगे और इन प्रश्नों के उत्तर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न-1. यह पत्र किसने, किसे और कहाँ से लिखा था?
प्रश्न-2. सुभाषचंद्र बोस वज़ीफ़ा मिलने की इच्छा क्यों कर रहे थे?
प्रश्न-3 सुभाष को कौन-सा स्थान पाने की आशा थी?

बच्चो! अब आपका अंतराल का समय समाप्त हो चुका है। अब मैं आपको इन प्रश्नों के उत्तर बताऊँगी।

उत्तर-1. यह पत्र सुभाषचंद्र बोस ने अपनी माता जी को राँची से लिखा था।
उत्तर-2. सुभाषचंद्र बोस अपने वज़ीफ़े के पैसों से ज़रूरतमंदों की सहायता करना चाहते थे।
उत्तर-3. सुभाषचंद्र बोस को सातवाँ स्थान पाने की आशा थी।

बच्चो! अब मैं आपको आगे पाठ समझाऊँगी, जिसे सभी बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे एवं समझेंगे।

सुभाषचंद्र बोस जी आगे अपने पत्र में लिखते हैं कि केवल अध्ययन ही विद्यार्थी जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों को हमेशा यही लगता है कि यदि हमने विश्वविद्यालय में शिक्षा पा ली तो हमने जीवन का चरम लक्ष्य पा लिया। लेकिन अगर किसी को विश्वविद्यालय जाने के बाद भी

Scanned with CamScanner

Date- Class- VI
Subject - Hindi Literature Page- 4
Subject Teacher- Ms Roma Rani

वास्तविक ज्ञान नहीं प्राप्त हुआ। वह आगे लिखते हैं कि मुझे ऐसी शिक्षा व्यवस्था से घृणा है। यदि हमें शिक्षा लेने के बाद भी ज्ञान नहीं हुआ तो हमें अशिक्षित ही रह जाना चाहिए। बच्चों को शिक्षा देने का अर्थ है उनमें चरित्र निर्माण करना। किताबी जानकारी अनिवार्य नहीं है, चरित्र के अंतर्गत सब कुछ आता है। जैसे- भगवान की भक्ति, देशभक्ति। इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो विद्यार्थी का चरित्र निर्माण करे और उसे कर्तव्य बोध कराए।

पत्र के अंत में सुभाषचंद्र बोस जी अपनी माता जी से कहते हैं कि मैं आगे की पढ़ाई कहाँ करूँ यह निश्चय मैं कलकत्ता आ कर करूँगा और वह अपना पत्र बंद कर देते हैं।

प्यारे बच्चो! आपने इस पाठ में पढ़ा कि कैसे सुभाष चंद्र बोस ने अपनी माँ से अपने मन में चलने वाले सभी विचारों को एक के बाद एक सांझा किया है। उन्होंने धन को सारी बुराइयों की जड़ कहा है और शिक्षा प्रणाली में भी सुधार करने के लिए कहा है।

बच्चो! मैंने आपको सारा पाठ समझा दिया है। आशा है यह आपको अच्छे से समझ आ गया होगा। अब मैं आपको गृह कार्य दूँगी, जिसे सभी बच्चे अपनी हिन्दी साहित्य की उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।

गृह कार्य :-

- बच्चो! आप इस पाठ के पृष्ठ - 63 पर आए शब्द अर्थ लिखेंगे एवं याद करेंगे।
- आप इस पाठ के संक्षेप में के प्रश्न करने की कोशिश करेंगे।

धन्यवाद!

Last page.

Scanned with CamScanner